राजावत परिवार - गणेश

Duration : 01.55 **Transcribed words :** 375

- संगीत -

00.08 कृष्णा कँवर कृष्णावत : मेरे ईष्ट देवता गणेश जी हैं और किस्मत से मोती डूंगरी गणेश जी मेरे पास ही में हैं...

(गाडी की हॉर्न की आवाजें)

(मंदिर की घंटी की आवाजें)

00.33 कृष्णा कँवर कृष्णावतः मुझे तेवीस साल हो गये... मैं गणेश जी मंदिर आती हूँ...

00.35 अनुदेव शास्त्रीः गणेश जी के बार में बता दूँ मैं, जैसा कि हमारे भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि आदि देव प्रथमो गणेशः... गणेश का अगर शाब्दिक अर्थ देखा जाये तो गणेश का एक शाब्दिक अर्थ है कि जो गणों के ईश हैं... उनको गणेश जी कहा गया है...

00.49 सुभांक्षी राजावत : गणेश जी सारी इच्छा पूरी करते हैं... स्पेशली पढ़ाई के लिये या, मतलब आगे फ्यूचर के लिये... और मेरा मन है भगवान पे, भक्ति है, इस वजह से मैं यहाँ आती हूँ...

01.01 विष्णु तिवारी : सनातन धर्म में मान्यता रही है कोई भी एक ईष्ट देव को अपन मान के चलते हैं... उनको अपना आराध्य देव मान के अपन उनका स्मरण करते हैं... और उससे अपन को एक पॉजिटिव फीलिंग्स आती है मन में...

00.13 वृंध्या राजावत : मुझे भगवान पर बहुत ज़्यादा विश्वास करना पसन्द है और मैं बहुत ज़्यादा विश्वास करती हूँ... और गणेश जी मेरे फेवरेट भगवान हैं... तो मैंने एक बुक बना रखी है और उसमें भी गणेश जी की फोटोज़ वगैरह लगा रखी हैं और बहुत सारी भगवानों की फोटोज हैं...

01.26 डॉ. अभिनव शर्मा : बहुत लम्बे टाईम से आ रहे हैं हम... यहाँ हमने इस मंदिर को बचपन से देखा है... और एक बहुत जुड़ाव है...यहाँ के आराध्य गोविन्द देव जी माने जाते हैं... और उसके बाद अगर कोई दूसरा मंदिर पूजा जाता है, राजस्थान के अंदर, जयपुर में ही विशेषकर, तो वो है विशेषकर, तो वो है गोविंद, यहाँ मोती डूंगरी का गणेश मंदिर... और इसकी बहुत मान्यता है, लोगों की एक आस्था है... और कई लोगों की मुरादें पूरी होती हैं... शादी के निमंत्रण यहाँ से शुरू होते हैं... और घर की शुरूआत यहां से होती है... हर चीज इसी मंदिर से शुरू होती है राजस्थान की, इस जयपुर शहर में...

(पृष्ठभूमि में लगातार मंदिर की घंटिया बज रही हैं)